Multiplier and Accelerator Model

[illegible] Multiplier [illegible] and Principle of Accelerator [illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1	[illegible]	[illegible]	0	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
4	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

सोचाथी अवधि में दूसरी अवधि की अपेक्षा उपभोग व्यय में 150 करोड़ की वृद्धि होगी। इसी प्रकार चौथी अवधि में कुल आय ह्रास करके शून्य तक पहुँच जायगी। गुणक एवं त्वरक के प्रभाव के परिणाम स्वरूप 5 अवधि तक आय बढ़ती है। उसके बाद आय घटने लगती है। क्योंकि इस स्थिति तक आते आते गुणक एवं त्वरक दोनों ही निष्क्रिय हो जाते हैं। इस प्रकार गुणक एवं त्वरक के प्रभाव को ग्रहण कर व्यापार चक्र की भिन्न भिन्न स्वरूप बनती है।

सैम्युलसन के गुणक एवं त्वरक अन्तःक्रिया माडल को निम्न प्रकार दिखाया जा सकता है। $C_t = \alpha Y_{t-1}$ .... (1)

यहाँ α सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति है, C_t = t समय पर उपभोग तथा Y_{t-1} = t−1 समय पर प्राप्त आय को बताता है। इसके अलावा विनियोग को उपभोग परिवर्तन के फलन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। $I_t = \beta(C_t - C_{t-1})$ (2) यहाँ β त्वरक गुणांक है। कीन्स के अनुसार $Y_t = C_t + I_t + G_t$ .... (3) यहाँ G_t = समय t पर स्वतंत्र विनियोग है। समीकरण 3 में समीकरण 1 और 2 का मान प्रतिस्थापित करने पर $Y_t = G_t + \alpha Y_{t-1} + \beta(C_t - C_{t-1})$

$= G_t + \alpha Y_{t-1} + \beta C_t - \beta C_{t-1} = G_t + \alpha Y_{t-1} + \beta.\alpha Y_{t-1} - \beta.\alpha Y_{t-2}$

तब $C_{t-1} = \alpha Y_{t-2} = G_t + \alpha Y_{t-1} + \beta.\alpha.Y_{t-1} - \alpha\beta Y_{t-2}$

$Y_t = G_t + \alpha(1+\beta) Y_{t-1} - \alpha\beta Y_{t-2}$ .... (4)

सैम्युलसन के अनुसार यदि हमें दो अवधियों की राष्ट्रीय आय ज्ञात हो तो आगामी अवधि की राष्ट्रीय आय, मशीन और लेकर आसानी से निकाली जा सकती है और जिससे यह सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति के साथ सम्बन्ध के पूर्ण मूल्यों पर निर्भर करेगा। यह मानकर कि सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य शून्य से अधिक है और एक से कम $0 < \alpha < 1$ एवं त्वरक का मूल्य शून्य से अधिक $\beta > 0$ है। सैम्युलसन पाँच प्रकार के चक्रीय उतार-चढ़ावों की व्याख्या करता है।

सैम्युलसन के माडल की कुछ विशेषताएं हैं जो निम्न हैं

(i) गुणक एवं त्वरक के मानों में अन्तर आने के साथ ही व्यापार चक्र की आकृति भी बदल जाती है जैसे जैसे गुणक तथा त्वरक के मान में अन्तर आता है वैसे वैसे व्यापार चक्र की आकृति भी बदल जाती है।

(ii) साधारणतया त्वरक β का मान जितना अधिक होगा, Y का समय पथ भी उतना ही विस्फोटक होगा।

(iii) सीमान्त उपभोग की प्रवृत्ति α का मान जितना ऊँचा होगा, उतार चढ़ाव की सम्भावना उतनी ही कम होगी।

(iv) व्यापार चक्रों का विश्लेषण इस मान्यता पर निर्भर करेगा कि उपभोग प्रवृत्ति का मान शून्य से अधिक तथा 1 से कम हो तथा त्वरक का मूल्य शून्य से अधिक हो।

Scanned with CamScanner